" अशुभ "

अशुभ क्या है? अशुभ शब्द का मानव जीवन में आगमन कैसे हुआ? अशुभ शब्द सुनने में ही कितना भयावह, डर उत्पन्न करने वाला लगता है? क्यों? कोई कार्य करने को आप जा रहे हैं और अचानक कुछ अशुभ घटित हो जाए, कल्पना भी कितनी भयावह है। मैं समझाता हू आपको कि आख़िर इस अशुभ के पीछे क्या भेद है?
प्रत्येक मनुष्य कोई भी कर्म किसी फल की प्राप्ति की इच्छा से करता है। आज वो द्वापरयुग वाला समय समाप्त हो गया है जबकि भगवान श्रीकृष्ण का ये कहना था कि कर्म करो, फल की इच्छा ना करो।
आज प्रत्येक इंसान यह तो चाह रखता ही है कि उसके प्रत्येक कर्म का कोई परिणाम (फल) आए अपितु सुखद आए यह लालसा (इच्छा) भी रखता है। इंसान का मस्तिष्क चलायमान होता है जो कभी भी एक ओर स्थिर नही रह सकता लेकिन इस चलायमान मस्तिष्क के होते हुए भी इंसान अपने दैनिक जीवन में घटित घटनाओ को अपने मस्तिष्क के एक किनारे में कहीं संकुचित रूप से संग्रह करके रखता है या कहिए कि वो भूलने का हर भरसक प्रयास करता है पर कुछ अंश जो मस्तिष्क के सीधे संपर्क में आ जाता है उसे मस्तिष्क अपने पास कही संग्रह कर लेता है।
अब इस अशुभ शब्द के पीछे की दास्तान समझते हैं। कोई व्यक्ति किसी सुखद परिणाम की लालसा से किसी कार्य को करने जा रहा हैं तभी उसका रास्ता एक काली बिल्ली काट देती है। वह इस दृष्टाँत को भूल जाने का हर भरसक प्रयास करता हैं लेकिन कही ना कही क्योंकि वह इस अशुभ से अवगत था तो उसके ना चाहते हुए भी यह दृष्टाँत उसके मस्तिष्क के सीधे संपर्क में आकर मस्तिष्क के किसी एक छोटे से भाग में कही संकुचित रूप में संग्रहीत हो जाता है। अब वह व्यक्ति उस कार्य को करता है लेकिन चाहे कारण उसका हो या कोई और, उसे सफलता नही मिलती तब अचानक ही उसे वो काली बिल्ली के रास्ता काट जाने वाला दृष्टाँत स्मरण हो आता है, और वह कार्य पूर्ण ना होने का समस्त दोष उस कारण के मत्थे मड़ देता है। आज के मनुष्य की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि वो अपनी भूल का ज़िम्मेदार स्वयं को ना बताकर कारकों को दोष देता है। दुखद परिणाम के लिए मानव द्वारा ऐसे कारक ही अशुभ कहलातें हैं। दूसरे शब्दों में यदि कहा जाए तो मनुष्य के कर्म के फलस्वरूप प्राप्त दुखद परिणामों के लिए गैर-ज़िम्मेदार कारक अशुभ कहलाते हैं। ऐसे कारकों को "अशुभ" की श्रेणी में संग्रहीत कर लिया जाता है।
जैसा नाम से ही ज्ञात होता है अशुभ (अ+शुभ): जिसके होने से शुभ ना हो।
या कहिए कि अगर आपको आपके किसी कार्य में सफलता ना मिले तो आपकी ढाल को अशुभ कहते हैं।
जब आप आपके किसी कार्य के बिगड़ने का कारण अशुभ को मान लेते हैं तब ऐसी स्तिथि में व्यक्ति अक्सर इस बात का प्रचार करता है। कभी आपके साथ ऐसा हुआ है कि आप किसी कार्य को कर रहे हो और आपके बड़े आपको अशुभ की संज्ञा देते हुए आपको उस कार्य को करने से रोकें। यकीन मानिए अगर आप उनसे ऐसा ना करने के पीछे की यथोचित वजह पूछेंगे तो उनका उत्तर या तो यह होगा कि हमें नही पता, या फिर ऐसे कार्यों को करने के लिए बड़े बुज़ुर्गो की मनाही थी हाँ इसके पीछे कोई तर्क संबंधी उत्तर तो नही दिया पर इसे अशुभ नाम से संबोधित किया, ऐसा उत्तर होगा। यकीन कीजिए यह बातें केवल प्रचार की हुई होती है। प्रचार के फलस्वरूप पीढ़ी दर पीढ़ी और समाज दर समाज यह लोक दंश फैला है और प्रचार के माध्यम से ही यह बातें आप तक आई।

" अशुभ किसी दैवीय शक्ति के रुष्ट हो जाने पर आपको मिलने वाला किसी प्रकार का कोई अभिशाप नही है अपितु आपके और हमारे जैसे अंधविश्वासी व्यक्ति के अंधविश्वास और झूठ बोलने की प्रवृत्ति के फलस्वरूप जन्मा एक ऐसा संकट है, एक ऐसा रोग है जो केवल आपको और हमें ही नही वरन संपूर्ण समाज को भी इस रोग से ग्रसित करता है। "